फ्लोरेंस नाइटिंगेल

एम्मा फिशेल

फ्लोरेंस नाइटिंगेल

"चलो यूरोप की एक लंबी यात्रा करते हैं," मिसेज़ नाइटिंगेल ने मिस्टर नाइटिंगेल से कहा, "जैसा कि अन्य अमीर लोग करते हैं."

जब तक वे घर वापिस पहुंचे तब तक उनके दो बच्चे हो चुके थे. प्रत्येक का नाम उन्होंने उस शहर के नाम पर रखा जहाँ बच्चा पैदा हुआ था. पार्थेनोप और फ्लोरेंस.

पार्थेनोप फ़्लोरेंस

नाइटिंगेल परिवार डर्बीशायर के अपने घर में रहते थे. वो एक बहुत बड़ा घर था, लेकिन वो मिसेज़ नाइटिंगेल के लिए इतना बड़ा नहीं था.

इसलिए उन्होंने हैम्पशायर में भी एक बड़ा घर खरीदा.

फ्लोरेंस के पास खेलने के लिए बहुत सारे खिलौने और पालतू जानवर और सत्ताईस चचेरे भाई-बहन थे.
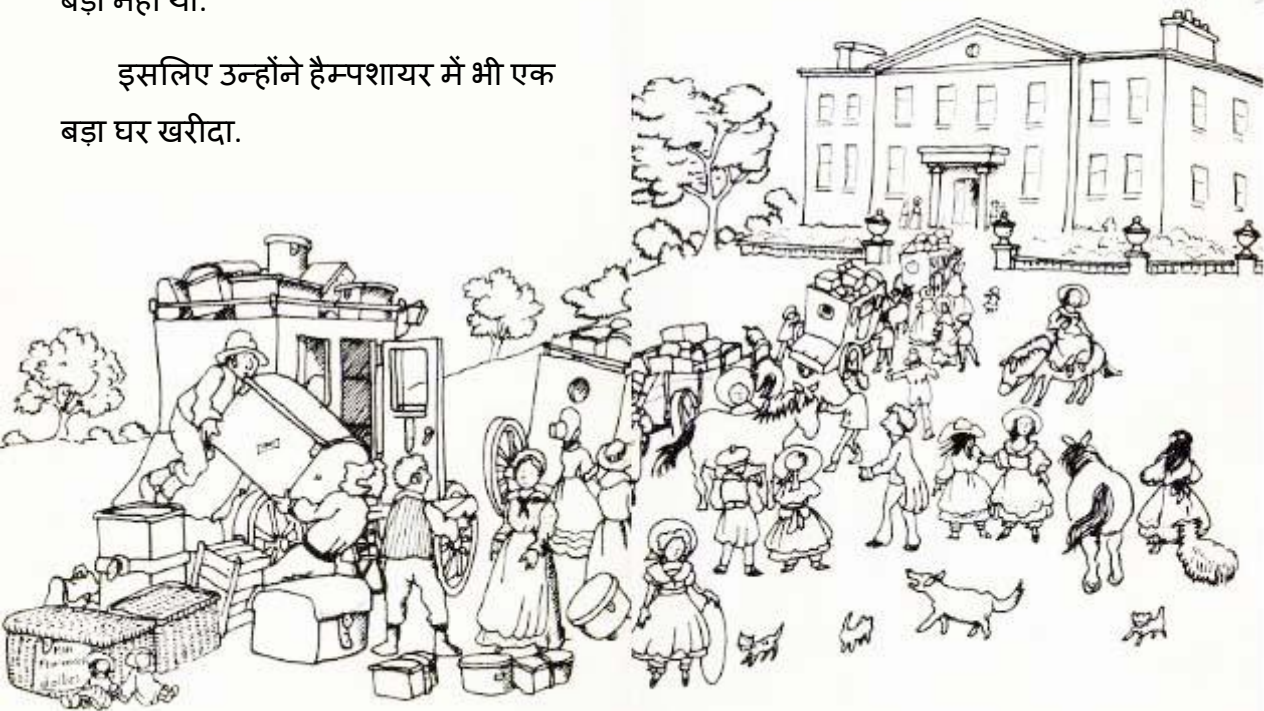
तब लड़कियों का जीवन बहुत अलग होता था. तब गरीब लड़कियों के लिए स्कूल ही नहीं होते थे और अमीर लड़कियों को भी ज्यादा नहीं पढ़ाया जाता था.

हालाँकि, फ्लोरेंस ने अपने पिता की बदौलत काफी पढ़ाई की.

फ्लोरेंस की माँ चिंतित थी. "कोई भी चतुर लड़कियों को पसंद नहीं करता है!" उन्होंने कहा. "पियानो बजाना, कढ़ाई करना, फूल व्यवस्थित सजाना - यही फ्लोरेंस को सीखना चाहिए!"

लेकिन फ्लोरेंस बड़ी होकर फूल सजाने से कहीं अधिक करना चाहती थी

जब फ्लोरेंस सत्रह वर्ष की थी तब नाइटिंगेल परिवार फिर से यूरोप चला गया. उन्होंने कई अलग-अलग देशों का दौरा किया और खूब मौज-मस्ती की.

लेकिन फ्लोरेंस अंत में घूमने से ऊब गई. वापस घर पहुंचने पर उसे खुशी हुई.

"मैं बहुत पार्टियां में शामिल हुई हूँ," उसने कहा. "अब मुझे गणित पढ़नी है."

माता-पिता को वो विचार बिल्कुल अच्छा नहीं लगा.

इसलिए फ्लोरेंस ने कुछ ऐसा करने की सोची जो उसके माता-पिता उसे करने देते. वो गरीब और बीमार लोगों से मिलने गई. उसने उनकी मदद करने की पूरी कोशिश की.

फ्लोरेंस और अधिक जानना चाहती थी. "मुझे अब एक अस्पताल में काम करना चाहिए," उसने कहा.

अस्पताल में काम की बात सुनकर उसके पिता बहुत गुस्सा हुए. उस समय के अस्पताल आज जैसे नहीं थे.

"नर्सिंग?" उसकी माँ ने कहा. "वो तो बेहद शर्म की बात होगी! इससे अच्छा तुम रसोईघर की नौकरानी बन जाओ!'

लेकिन एक शख्स ने फ्लोरेंस का पक्ष लिया. वो सिडनी हर्बर्ट थे और वो एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति थे.

"नर्सिंग को तुम जैसे लोगों की ज़रूरत है," उन्होंने कहा. "यदि तुम सच में सीखना चाहते हो, तो इन पुस्तकों से शुरू करो!

फ्लोरेंस ने वो किताबें लीं और उनका गुप्त रूप से अध्ययन किया.

फ्लोरेंस ने जितना अधिक ने पढ़ा,
उतना ही वो समझी कि उसे चीजों को
बदलने की कितनी कोशिश करनी है.
एक ही गली में
कितने मरीज
पड़े थे!
सर्जन
गंदे चाकू
उपयोग
करते हैं!
गरीब लोग
बदबूदार
अस्पतालों में
खचाखच भरे
पड़े थे.
कोई नर्स नहीं
बनना चाहता था.
नर्सें अक्सर गंदी
बूढ़ी औरतें होती थीं
जो बहुत ज्यादा
शराब पीती थीं और
मरीज को लूटती
थीं.
कई नर्सें पढ़-लिख
तक नहीं सकती
थीं. उनके पास
कोई प्रशिक्षण नहीं
था और उनके
अधिकांश रोगियों
की मृत्यु हो जाती
थी.

जब फ्लोरेंस उनतीस वर्ष की थी, रिचर्ड मॉन्कटन मिल्नेस नामक एक पत्रकार ने उन्हें शादी का प्रस्ताव दिया.

"मैं एक अच्छी नर्स और एक अच्छी पत्नी नहीं हो सकती," फ्लोरेंस ने उदास होकर कहा. "मुझे "न" कहना होगा."
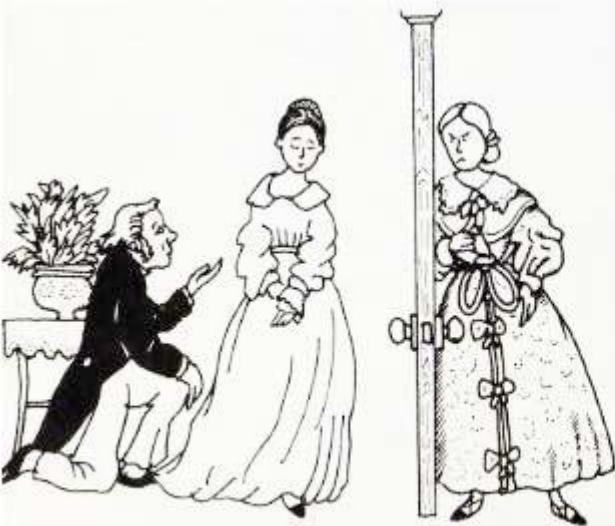
"हम तुम्हें विदेश भेजेंगे," फ्लोरेंस की माँ ने कहा. "फिर नर्स बनने की तमन्ना तुम्हारे दिमाग से हमेशा के लिए निकल जाएगी!"

कैसरवर्थ इंस्टिट्यूट

स्वयंसेवी नर्सों की हमेशा स्वागत!

लेकिन माँ ने जैसा सोचा था वैसा नहीं हुआ. असल में उसका उल्टा हुआ. जब वो विदेश में थी तो फ्लोरेंस को सीखने की सही जगह मिली. और वहां उसे रोकने वाला कोई नहीं था.

अस्पताल में फ्लोरेंस हर सुबह पांच बजे उठती थी और वो देर रात तक काम करती थी.

जब फ्लोरेंस अपने बीमार परिवार को स्वस्थ्य बनाने के लिए काम कर रही थी तब उसकी ख्याति दूर-दूर तक फ़ैल रही थी. फ्लोरेंस से एक बड़ा अस्पताल चलाने को कहा गया.

तीन महीने बाद जब वो घर आई, तो उसे अपने ही घर में अभ्यास के लिए बहुत काम मिल गया.

फ्लोरेंस ने जल्द ही अनुभव किया कि अस्पताल चलाने का मतलब था, वहां उसे सब कुछ करना पड़ता था. तभी हैजा नामक एक भयानक बीमारी फैली.

जल्द ही हजारों लोग बीमार हो गए. फिर फ्लोरेंस हैजा पीड़ितों से भरे एक बड़े अस्पताल में चली गई.

परिवार को उसकी बहुत चिंता थी. हैजा पकड़ना बहुत आसान था और उस बीमारी से कई लोगों की मौत हो चुकी थी.

जल्द ही बुरी खबर आई.

द टाइम्स

14 अक्टूबर 1854

14 October 1854

युद्धक्षेत्र की तुलना में अस्पतालों में अधिक लोग मरते हैं - विलियम हॉवर्ड रसेल

लेकिन बीमारी ही एकमात्र खतरा नहीं था. रूस और तुर्की के बीच युद्ध छिड़ गया था. एक साल बाद, ब्रिटेन और फ्रांस भी रूस के खिलाफ खड़े हो गए थे.

घायल सैनिकों को तुर्की के स्कूटरी नामक स्थान पर ले जाया जाता था. लेकिन वहां डॉक्टरों की मदद के लिए एक भी नर्स नहीं थी.

"सैनिक बेवजह मर रहे हैं. मुझे कुछ करना चाहिए," फ्लोरेंस ने सोचा.

फिर फ्लोरेंस ने सिडनी हर्बर्ट को लिखा ...

जैसे सिडनी हर्बर्ट ने फ्लोरेंस को लिखा था.
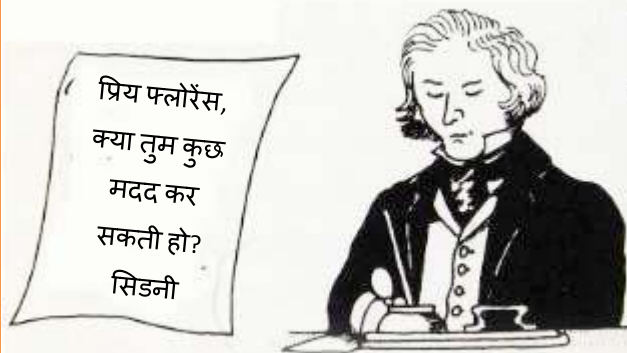
सिडनी हर्बर्ट ने फ्लोरेंस को स्कूटरी में अस्पताल चलाने के लिए कहा. जल्द ही फ्लोरेंस और अड़तीस नर्सें तुर्की के लिए रवाना हुईं.

वे 4 नवंबर, 1854 को वे स्कूटरी पहुंचीं. फ्लोरेंस अब चौंतीस साल की थी.

वहां का अस्पताल अंधेरा और गंदा था. हर जगह, घायल सैनिक पड़े थे और वे मर रहे थे. साथ-साथ और घायल सैनिक लगातार आ रहे थे.

वहां सब कुछ गंदा था. साफ पानी नहीं था, कोई दवा नहीं थी, पट्टी तक नहीं थी, साबुन और तौलिए भी नहीं थे.

अधिकांश सैनिकों की हालत सुधरने के बजाए और बिगड़ रही थी.

"सबसे पहले सैनिकों को साफ-सुथरा करके उन्हें अच्छी तरह से खिलाया जाना चाहिए," फ्लोरेंस ने कहा. फिर वो उसकी नर्सें इस काम में लग गईं.

फिर फ्लोरेंस ने एक घर किराए पर लिया. वहां उसने सैनिकों की चादरें और कपड़े साफ़ करने के लिए धोबीघाट बनाया.

वो बहुत कम ही सो पाई.

उसे हर दिन नई-नई समस्याओं को सुलझाना पड़ता था.

"युद्धकाल में अस्पताल चलाना एक महिला के बस की बात नहीं है?" उन्होंने कहा.

इससे भी बुरी बात यह थी कि कुछ डॉक्टर भी फ्लोरेंस को नहीं चाहते थे. सेना के कुछ अधिकारी भी उसे नापसंद करते थे.

लेकिन फ्लोरेंस ने धमकाया और लोगों से काम करवाया. फिर धीरे-धीरे, अस्पताल बेहतर होने लगा.

घायल सैनिक फ्लोरेंस से प्यार करते थे. उसने उन्हें ठीक करने में मदद करने के लिए जो संभव था वो सब कुछ किया.

उसने इंग्लैंड से किताबें और खेल और फ्रांस से शतरंज मंगवाया.

उसने उन सैनिकों के लिए पत्र भी लिखे जो खुद लिखना नहीं जानते थे.
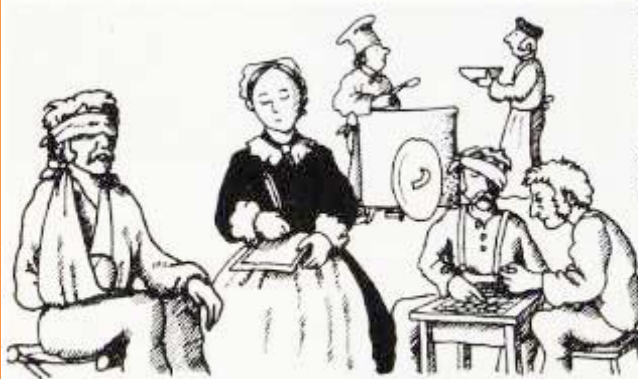
और हर शाम वो सैनिकों से गुडनाइट कहने के लिए हरेक वार्ड का चक्कर लगाती थी.

सैनिकों ने उसे "दिए वाली महिला" (लेडी विद द लैंप) बुलाया.

तभी फ्लोरेंस खुद बुरी रूप से बीमार पड़ गई. बारह दिनों तक किसी को नहीं पता था कि वो ज़िंदा रहेगी या मरेगी.

अब तक, इंग्लैंड में लोग उसके बारे में और उसके बहादुरी के काम के बारे में काफी कुछ जान गए थे.

सभी लोग उसकी खबर का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे.

जब युद्ध समाप्त हुआ, तो इंग्लैंड में उसके स्वागत के लिए बड़े समारोहों की एक योजना बनाई गई.

लेकिन फ्लोरेंस वो सब हंगामा नहीं चाहती थी, इसलिए उसने उन सभी को बेवकूफ बनाया.

महारानी विक्टोरिया ने फ्लोरेंस को स्कॉटलैंड में अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया.

फ्लोरेंस ने रानी को स्कूटरी की भयावहता के बारे में बताया. "और अगर हमने चीजों को नहीं बदला, तो वही दुर्दशा दुबारा होगी," उसने कहा.

फिर फ्लोरेंस ने महारानी को अपने कुछ विचार बताए.

"हम फ्लोरेंस के ज्ञान और अनुभव से काफी प्रभावित हैं," रानी ने कहा.

फ्लोरेंस केवल सेना के अस्पताल को ही नहीं बदलना चाहती थी.

उसने उन वर्कहाउस का दौरा किया, जहां सबसे गरीब लोग रहते थे. वो झुग्गी-झोपड़ियों का चक्कर लगाती थी, जहाँ घरों में एक साथ एक भीड़ रहती थी और बीमारियाँ तेजी से फैलती थीं.

क्या गलत था? उसने यह पता लगाने की कोशिश की, और फिर चीजों को बेहतर बनाने के तरीके खोजे.

उसने महत्वपूर्ण लोगों को यह बताया कि उन्हें क्या करने की ज़रुरत थी, भले ही उनमें से ज़्यादातर ने उसकी बात को नज़रअंदाज़ किया.

पर धीरे-धीरे, उसने अपने काम पूरे किए.

सिडनी हर्बर्ट, फ्लोरेंस के बारे में चिंतित थे. "तुम बहुत ज्यादा काम कर रही हो," उन्होंने कहा.

"काफी नहीं, सिडनी!" फ्लोरेंस ने कहा. "और अब मेरे पास भारत में स्थिति सुधारने के बारे में भी कुछ विचार हैं!"

हालाँकि भारत बहुत दूर था, लेकिन उस समय वहां अंग्रेजों का शासन था. वहां लाखों की संख्या में बीमारियों और भूख से मर रहे थे.

फ्लोरेंस ने पूरे भारत में डॉक्टरों को पत्र लिखे. उसने उनसे ढेर सवाल पूछे.

और उसे ढेर सारे जवाब भी मिले. वो सारे उत्तर उसने भारत में समस्याओं पर अपनी एक रिपोर्ट में लिखे. वो रिपोर्ट दो हजार पेज लंबी थी.

नर्सों के लिए एक प्रशिक्षण स्कूल स्थापित किया गया और उसका नाम फ्लोरेंस के नाम पर रखा गया. प्रशिक्षण के दौरान छात्र अस्पताल में ही रहते थे.

चालीस और साठ की उम्र के बीच फ्लोरेंस बहुत बीमार रही. लेकिन बिस्तर में लेटे रहने के बावजूद उसने कभी भी काम करना बंद नहीं किया - हालाँकि उसकी बिल्लियाँ कभी-कभी ऐसा करती थीं.

फ्लोरेंस अपने छात्रों के प्रति बहुत दयालु थीं. वो उनके लिए चाय पार्टियां आयोजित करती थीं और उन्हें छुट्टी पर जाने के लिए पैसे भी देती थीं.

जब फ्लोरेंस अस्सी साल की हुईं तब उनकी आंखों की रोशनी इतनी खराब हो गई कि उन्हें काम करना बंद करना पड़ा. उसी वर्ष महारानी विक्टोरिया की मृत्यु हो गई.

नए राजा, एडवर्ड सप्तम ने फ्लोरेंस को एक विशेष सम्मान दिया, जिसे "ऑर्डर ऑफ मेरिट" कहा जाता है. यह पहली बार था जब वो सम्मान किसी महिला को दिया गया था.

नब्बे वर्ष की आयु में फ्लोरेंस की मृत्यु हुई. सब लोग चाहते थे कि उनका अंतिम संस्कार वेस्टमिंस्टर एब्बे में बहुत सम्मान के साथ हो.
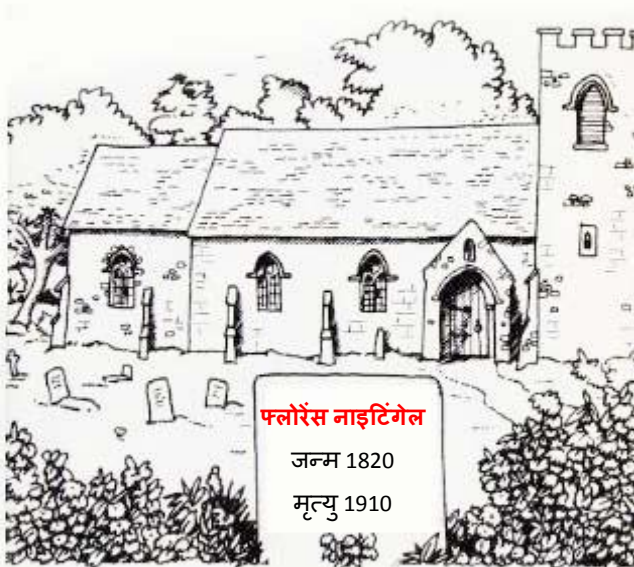
लेकिन फ्लोरेंस ने लोगों से वो समारोह नहीं आयोजित करने के लिए कहा था.

आगे के तथ्य

डॉक्टर और नर्स

डॉक्टर बनने वाली पहली ब्रिटिश महिला को डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए अमेरिका और स्विटजरलैंड जाना पड़ा. उस समय ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में केवल लड़के ही पढ़ सकते थे.

नाइटिंगेल ट्रेनिंग स्कूल ने दिखाया कि नर्सिंग का काम बिस्तरों की चादर बदलने और मरीजों को खिलाने से कहीं ज्यादा था. पहली बार नर्सों ने यूनिफार्म पहनी और परीक्षाएं दीं.

जगहें और गंध

फ्लोरेंस के कुछ सुधार बहुत सरल थे, जैसे अस्पताल की खिड़कियां खोलना! कई लोग मानते थे कि ताजी हवा बीमारियां फैलती थी इसलिए खिड़कियां सर्दियों की शुरुआत में ही बंद कर दी जाती थीं.

बहुत सारे अस्पतालों में कोई शौचालय नहीं था, बिस्तरों के नीचे सिर्फ शौच के लिए बर्तन रखे होते थे. वे अक्सर काफी बहुत भरे होते थे.
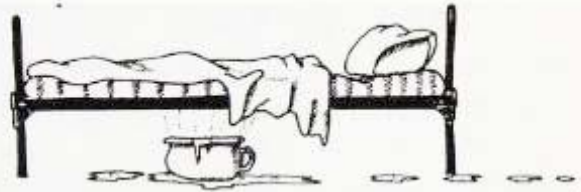
फ्लोरेंस ने अपने अस्पतालों में मरीज़ के बिस्तर अलग करने के लिए स्क्रीन लगाईं. इससे पहले, अधिकांश ऑपरेशन अन्य सभी रोगियों के पूर्ण दृश्य में किए जाते थे.

कुछ महत्वपूर्ण तिथियां

फ्लोरेंस नाइटिंगेल का जीवनकाल

1820 फ्लोरेंस का जन्म 12 मई को फ्लोरेंस, इटली में हुआ.

1837 विक्टोरिया इंग्लैंड की महारानी बनीं. फ्लोरेंस यूरोप के दौरे पर गईं.

1851 डसेलडोर्फ, जर्मनी. में कैसरवर्थ में तीन महीने काम किया.

1853 लंदन के हार्ले स्ट्रीट में अपना पहला अस्पताल चलाया.

1854 क्रीमिया युद्ध शुरू हुआ. नवंबर में फ्लोरेंस सेना के अस्पताल में काम करने के लिए तुर्की के स्कूटरी गईं.

1855 फ्लोरेंस खतरनाक रूप से बीमार पड़ीं लेकिन ठीक हो गईं.

1856 युद्ध समाप्त हुआ. फ्लोरेंस इंग्लैंड लौटीं और महारानी विक्टोरिया से मिलीं.

1860 लंदन में नर्सों के लिए नाइटिंगेल ट्रेनिंग स्कूल खोला.

1901 महारानी विक्टोरिया का निधन.

1907 फ्लोरेंस, ऑर्डर ऑफ मेरिट से सम्मानित.

1910 13 अगस्त को फ्लोरेंस की मृत्यु हुई.